ज्वाला-स्वरूप अथवा ज्वालामुखी योग का भावार्थ

1. ज्वालामुखी माना ही ज्वाला-स्वरूप। पावरफुल योग को ही बाबा ज्वालामुखी योग नाम देता है। ज्वाला लगातार होने से पावरफुल होती है। ज्वाला स्वरूप याद माना एक ही अनुभव में बैठना, जिसकी सकाश ऑटोमेटिक चारों ओर फैलती है।

2. यह ऐसी स्थिति है जिसमें सूक्ष्म सेवा ऑटोमेटिक समाई है। जब हम ज्ञानसूर्य के साथ मास्टर ज्ञानसूर्य होकर बैठते हैं तो बहुत शक्तिशाली स्थिति बनती है और फिर सेवा के भाव से संकल्प थोड़ा सा रचते हैं कि अब यह सकाश हम विश्व की आत्माओं को देते हैं, प्रकृति को भी देते हैं, जीव जन्तुओं को भी देते हैं तो वह सकाश वहां पहुंचती है। पॉवरफुल योग के बाद स्थिति बहुत लाइट हो जाती है। एक ही संकल्प में स्थिति होने के कारण और कोई संकल्प नहीं रहते।

3. बाबा और हम कम्बाइन्ड हैं, ऐसे अनुभव होता जैसे बाबा हमारे द्वारा विश्व को सकाश दे रहा है। जब तक बिन्दी बनकर बिन्दी को याद नहीं करेंगे तब तक सकाश देने की सेवा नहीं हो सकती है।